gay, bisexual, transgender, queer, and intersex (LGBTQI+) people's health in India. PLOS Global Public Health, 3(4), e0001362. https://doi.org/10.1371/journal.pgph.0001362
6.Chakrapani, V., Scheim, A. I., Newman, P. A., Shunmugam, M., Rawat, S., Baruah, D., Bhatter, A., Nelson, R., Jaya, A., & Kaur, M. (2022). Affirming and negotiating gender in family and social spaces: Stigma, mental health and resilience among transmasculine people in India. Culture, Health & Sexuality, 24(7), 951–967. https://doi.org/10.1080/13691058.2021.1901991
7.Connolly, M. D., Zervos, M. J., Barone II, C. J., Johnson, C. C., & Joseph, C. L. (2016). The mental health of transgender youth: Advances in understanding. Journal of Adolescent Health, 59(5), 489-495.
8.Carvalho, S. A., Carvalho, F., Fonseca, L., Santos, G., & Castilho, P. (2022). Beyond the centrality of shame: How self-concealment and fear of receiving compassion from others impact psychological suffering in transgender adults. Journal of homosexuality, 1-19.
9.Fontanari, A. M. V., Vilanova, F., Schneider, M. A., Chinazzo, I., Soll, B. M., Schwarz, K., ... & Brandelli Costa, A. (2020). Gender affirmation is associated with transgender and gender nonbinary youth mental health improvement. LGBT health, 7(5), 237-247.
10.Granberg, M., Andersson, P. A., & Ahmed, A. (2020). Hiring discrimination against transgender people: Evidence from a field experiment. Labour Economics, 65, 101860.
11.Goldblum, P., Testa, R. J., Pflum, S., Hendricks, M. L., Bradford, J., & Bongar, B. (2012). The relationship between gender-based victimisation and suicide attempts in transgender people. Professional Psychology: Research and Practice, 43(5), 468.
12.Gomes de Jesus, J., Belden, C. M., Huynh, H. V., Malta, M., LeGrand, S., Kaza, V. G. K., & Whetten, K. (2020). Mental health and challenges of transgender women: A qualitative study in Brazil and India. International Journal of Transgender Health, 21(4), 418–430. https://doi.org/10.1080/26895269.2020.1761923
13.McCann, E., & Sharek, D. (2016). Mental health needs of people who identify as transgender: A review of the literature. Archives of psychiatric nursing, 30(2), 280-285.
14.Meyer, I. H. (1995). Minority stress and mental health in gay men. Journal of health and social behavior, 38-56.
15.Meyer, I. H., Schwartz, S., & Frost, D. M. (2008). Social patterning of stress and coping: does disadvantaged social statuses confer more stress and fewer coping resources?. Social science & medicine, 67(3), 368-379.
16.Pandya, A. K., & Redcay, A. (2021). Access to health services: Barriers faced by the transgender population in India. Journal of Gay & Lesbian Mental Health, 25(2), 132-154.
17.Pariseau, E. M., Chevalier, L., Long, K. A., Clapham, R., Edwards-Leeper, L., & Tishelman, A. C. (2019). The relationship between family acceptance-rejection and transgender youth psychosocial functioning. Clinical Practice in Pediatric Psychology, 7(3), 267.
18.Pemde, H. K., Bansal, U., Bhattacharya, P., Sharma, R. N., Kumar, S., Bhatia, P., Niranjan, S., Dhonde, S., & Garg, J. C. (2023). Adolescent Health Academy Statement on the Care of Transgender Children, Adolescents, and Youth. Indian Pediatrics, 60(10), 843–854.
19.Raghuram, H., Parakh, S., Chidambaranathan, S., Tugnawat, D., Pillai, V., Singh, S., Singh, S., Shaikh, A., & Bhan, A. (2023). Impact of the COVID-19 pandemic on the mental health of transgender persons in India: Findings from an exploratory qualitative study. Frontiers in Global Women's Health, 4, 1126946. https://doi.org/10.3389/fgwh.2023.1126946
20.Rood, B. A., Maroney, M. R., Puckett, J. A., Berman, A. K., Reisner, S. L., & Pantalone, D. W. (2017). Identity concealment in transgender adults: A qualitative assessment of minority stress and gender affirmation. American Journal of Orthopsychiatry, 87(6), 704.
21.Rood, B. A., Reisner, S. L., Surace, F. I., Puckett, J. A., Maroney, M. R., & Pantalone, D. W. (2016). Expecting rejection: Understanding the minority stress experiences of transgender and gender-nonconforming individuals. Transgender health, 1(1), 151-164.
22.Rendina, H. J., Cain, D. N., López-Matos, J., Ray, M., Gurung, S., & Parsons, J. T. (2020). Measuring experiences of minority stress for transgender women: Adaptation and evaluation of internalised and anticipated transgender stigma scales. Transgender health, 5(1), 42-49.
23.Reyes, M. E. S., Alcantara, A. R. E., Reyes, A. C. C., Yulo, P. A. L., & Santos, C. I. P. (2016). Exploring the link between internalised stigma and self-concept clarity among Filipino transgenders. North American Journal of Psychology, 18(2).
24.Shaikh, S., Mburu, G., Arumugam, V., Mattipalli, N., Aher, A., Mehta, S., & Robertson, J. (2016). Empowering communities and strengthening systems to improve transgender health: outcomes from the Pehchan programme in India. Journal of the International AIDS Society, 19, 20809.
25.Thaker, J., Dutta, M., Nair, V., & Rao, V. P. (2018). The interplay between stigma, collective efficacy, and advocacy communication among men who have sex with men and transgender females. Journal of health communication, 23(7), 614-623.
26.WHO. (2022). Mental health. World Health Organization. Retrieved on March 31, 2024, from https://www.who.int/news-room/fact-sheets/detail/mental-health-strengthening-our-response#:~:text=Mental%20health%20is%20a%20state,and%20contribute%20to%20their%20community.
27.Zeluf, G., Dhejne, C., Orre, C., Mannheimer, L. N., Deogan, C., Höijer, J., ... & Thorson, A. E. (2018). Targeted victimisation and suicidality among trans people: A web-based survey. LGBT health, 5(3), 180-190.

****

भक्ति जागरण में निर्गुण काव्य के प्रवर्तक-संत नामदेव

डॉ. राजकुमार उपाध्याय 'मणि'
@ एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा (पंजाब)

भारत में भक्ति का प्रमुख अवदान मराठी संतों द्वारा विशेष उल्लेखनीय है। जहां संतों ने सगुण-निर्गुण की भक्ति धारा प्रवाहित की थी। महाराष्ट्र की भक्ति का सूत्रपात आचार्य पुण्डरीक से मनाना चाहिए क्योंकि महाराष्ट्र की भक्ति का केंद्र पंढरपुर को स्थापित करने वाले आचार्य पुण्डरीक हैं, जिन्होंने अपने माता-पिता की सेवा में लीन रहते हुए भगवान श्री हरि का दर्शन किया था और उन्हें श्रीकृष्ण के बाल रूप में ईंट पर विराजमान रहने के लिए कहा था। इसलिए ईंट पर विराजे हुए रूप के कारण इन्हें विठ्ठलनाथ की संज्ञा मिली थी। यही संत पुण्डरीक ने पंढरपुर में पांडुरंग की मूर्ति की स्थापना की थी, जिस बाल रूपी श्रीकृष्ण के सिर पर शिवलिंग प्रतिष्ठित है। यही पांडुरंग आगे चलकर विट्ठल आराध्य माने गए।

कालान्तर में, महाराष्ट्र के इस पंढरपुर में कार्तिक एवं आषाढ़ की एकादशी के दिन विशाल महोत्सव होने लगा। तदुपरांत प्रदेश के भक्तों द्वारा असंख्य तीर्थ-यात्रा आरंभ हो गई। इन तीर्थ-यात्रियों को वारकरी की संज्ञा मिली। अतएव पंढरपुर के यात्री भक्तों को वारकरी संप्रदाय का भक्त कहा गया। इसके यात्री 'विट्ठल विट्ठल विट्ठलनाथ। पुंडर पुंडर पुंडरनाथ' का संकीर्तन करते हुए शताब्दियों से वारकरी (यात्रा) करते हैं। यह पंढरपुर महाराष्ट्र का तीर्थ क्षेत्र उत्तर का काशी, मथुरा और अयोध्या की भांति भक्ति का प्रधान केंद्र है। जहां से वैष्णव भक्ति की सरिता महाराष्ट्र से प्रवाहित होकर देश के अन्य क्षेत्रों में भक्ति-संगम और सामाजिक समरसता का संदेश दिया है।

महाराष्ट्र की भक्ति में महानुभाव संप्रदाय का विशेष योगदान है क्योंकि बारहवीं शती में गुजरात के राजा त्रिबल्ल्भ देव के प्रधानमंत्री के पुत्र हरपाल देव को गृहस्थ-जीवन से वैराग्य हो जाने पर वे ऋद्धिपुर-विदर्भ, महाराष्ट्र चले आए। यहाँ कृष्णोपासक गुरु गोविन्द प्रभु से दीक्षा लेकर चक्रधर संत हो गये। इन्होंने बहुदेवोपासना में से कृष्ण को परमेश्वर मानकर अहिंसा, निःसंग, निवृत्ति, भक्ति को अपने पंथ का आचार-धर्म घोषित किया। कालान्तर में, इस पंथ में श्रीकृष्ण, दत्तात्रेय, चक्रपाणि, गोविन्द प्रभु, चक्रधर स्वामी को पंच-कृष्ण के रूप में मान्यता मिली और यही आराध्य माने गए। इस प्रकार से महाराष्ट्र की भक्ति में महानुभाव पंथ का प्रदेय सिद्ध हुआ।

मराठी संत परम्परा में महाराष्ट्र के ब्राह्मण-वर्गीय समाज की अपेक्षा मध्यवर्गीय समाज के अनेक संतों के साथ-साथ स्त्री-संतों की विशिष्ट भूमिका रही है। इस संत परम्परा में वारकरी संप्रदाय का प्रवर्तक ज्ञानेश्वर को माना गया है। डॉ. बलदेव वंशी ने इनके बारे में लिखा है- "संत ज्ञानेश्वर, जो ज्ञानदेव के नाम से भी विख्यात हैं, वारकरी संप्रदाय के प्रवर्तक थे। वारकरी का अर्थ होता है- यात्रा करनेवाला। वारी (यात्रा) करी (करनेवाला)। ज्ञानेश्वर सदा ही यात्रारत रहे। धार्मिक-यात्रा, विशेष रूप से वारकरी पंढरपुर में जाकर वर्ष में दो बार अपने इष्ट विट्ठल की मूर्ति के दर्शन करते थे; किंतु ज्ञानेश्वर नाथ-मत में दीक्षित थे और आदिनाथ को अपना गुरु मानते थे।"[1]

भारत की समृद्ध संत परम्परा में महाराष्ट्र के प्रमुख पांच संतों को पंच-महापुरुष, पंच-भक्तगण या संत-पंचायतन भी कहा गया है। दर्जी-छीपा समाज से आने वाले संत नामदेव, भक्ति के ज्ञान-सागर की समुज्ज्वल-कीर्ति संत ज्ञानेश्वर, आध्यात्मिक भक्ति के शिखर-पुंज संत

एकनाथ, बिठोवा के विट्ठल की भक्ति के मूर्त-रूप तुकाराम और राष्ट्र-भक्ति में क्षात्र-जागरण के पुरस्कर्ता समर्थगुरु रामदास की संत-पंचायतन मराठी-भक्ति की अविरल-धारा कई शताब्दियों से प्रवहमान रही है। श्रीमती (डॉ.) रमेश सेठ ने 'महारष्ट्र की वैष्णव-भक्ति परम्परा और तुकाराम' में मराठी-भक्ति की धारा का छः सोपान बताया है-

(क) नाथ संप्रदाय (1100-1300 ई.)
(ख) महानुभाव संप्रदाय (1200-1375 ई.)
(ग) वारकरी संप्रदाय (1270-1790 ई.)
(घ) समर्थ संप्रदाय (1608-1750 ई.)
(ङ) पंडित काव्यधारा (1608-1800 ई.)
(च) आनंद संप्रदाय (1600-1730 ई.)[2]

महाराष्ट्र की इस भक्ति धारा को नामदेव, ज्ञानेश्वर, एकनाथ, तुकाराम, रामदास, निवृत्तिनाथ, सोपानदेव, सावता माली, विसोवा खेचर, नरहरि सुनार, बंका, भानुदास, राका महार, गोरा कुम्हार के साथ-साथ महदाइसा, मुक्ताबाई, जनाबाई, सोयराबाई, निर्मलाबाई, भागूबाई, बेणाबाई, कान्होपात्रा, प्रेमाबाई, बहिणाबाई, सखूबाई, बेइयाबाई, आऊबाई, लिम्बाई, लड़ाई आदि स्त्री-संतों की अपनी-अपनी पहचान एवं भक्ति का अप्रतिम अवदान है, जिन्होंने महाराष्ट्र में भक्ति जागरण के साथ -साथ सामाजिक क्रांति को भी जन्म दिया है।

मराठी वैष्णव भक्ति का केंद्र पंढरपुर होने से बिठोवा मंदिर के आराध्य देव पांडुरंग-विट्ठलनाथ की भक्ति की प्रधानता है, जिसमें 'रामकृष्ण हरि-पुंडर' के नाम स्मरण की महत्ता मानी गई है। यहां के भक्तों का मूल मंत्र 'ॐ वासुदेवाय नमः' होता है। वारकरी संप्रदाय की भक्ति का आधार ग्रंथ- 'ज्ञानेश्वरी (भगवद्गीता का मराठी भावार्थ), एकनाथी-भागवत (श्रीमद्भागवत पुराण का भावार्थ) और 'तुकाराम अभंगगाथा' का प्राधान्य है। इसे वारकरी संप्रदाय का प्रमाण-त्रयी भी कहा गया है। जैसे दर्शनशास्त्र एवं वैष्णव-भक्ति के प्राधान्य ग्रंथ प्रस्थान-त्रयी का 'ब्रह्मसूत्र' (वेदांत) श्रीमद्भागवत गीता और उपनिषदीय ग्रंथ हैं। वैसे ही मराठी भक्ति साहित्य में इन ग्रंथों की विशेष महत्ता है।

महाराष्ट्र की सम्यक भक्ति का विकास नामदेव से दिखाई देने लगता है, जिनका प्रदेय भक्ति की ज्ञानेश्वरी शाखा से मिलती है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने संत नामदेव की भक्ति की साधना का प्रदेय इस रूप में रेखांकित किया है- "महाराष्ट्र के भक्तों में नामदेव का नाम सवसे पहले आता है। मराठी मापा के अभंगों के अतिरिक्त इनकी हिंदी रचनाएँ भी प्रचुर परिमाण में मिलती हैं। इन हिंदी रचनाओं में एक विशेष बात यह पायी जाती है कि कुछ तो सगुणोपासना से संबंध रखती हैं और कुछ निर्गुणोपासना से। ....नामदेव की रचनाओं में यह बात साफ दिखाई पड़ती है कि सगुण भक्ति पदों की भाषा तो ब्रज या परंपरागत काव्य भाषा है, पर 'निर्गुण बानी' की भाषा नाथपंथियों द्वारा गृहीत खड़ी बोली या सधुक्कड़ी भाषा। नामदेव की रचना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 'निर्गुणपंथ' के लिए मार्ग निकालनेवाले नाथपंथ के योगी और भक्त नामदेव थे।"[3] अतः महाराष्ट्र की भक्ति का विकास नामदेव से ही समझना चाहिए। किन्तु, जन्म की दृष्टि से संत नामदेव से बीस वर्ष और संत ज्ञानदेव से पच्चीस वर्ष संत सावता माली ज्येष्ठ थे। इसी प्रकार नामदेव और ज्ञानेश्वर से ज्येष्ठ संत गोरा कुम्हार भी थे। संत नामदेव के बाद महारष्ट्र की श्रेष्ठ कवयित्री संत जनाबाई का नाम लिया जाता है। इनके बाद संत ज्ञानेश्वर का समय माना गया है।

किन्तु, भारतीय संत परम्परा में **14**वीं शताब्दी के संत नामदेव महाराष्ट्र के पंच-संत देवों में से एक हैं- नामदेव, ज्ञानदेव, एकनाथ, रामदास और तुकाराम। महाराष्ट्र में ही नामदेव नामक कुल छः संत पाये जाते हैं। उत्तर भारत में भागवत धर्म के प्रचारक एवं मराठी-हिन्दी के कवि संत नामदेव जिला परभनी-महाराष्ट्र के रहने वाले थे। जिनका काल खण्ड सन् **1270** से **1350** ई**0** माना जाता है। इनके पिता दामा सेठ (दया शेठ) माता गोणाई थी। सम्पूर्ण परिवार वैष्णव भक्त था। उनके घर में भगवान विट्ठलनाथ का विग्रह रहता था। पिता के स्वर्गवास हो जाने पर दूध पिलाने की जिम्मेदारी नामदेव को मिल गयी और अपनी भक्ति से विग्रहमूर्ति को नामदेव के हाथों दूध पीना पड़ गया। तब से नामदेव और भगवान विट्ठल में प्रगाढ़ता बढ़ गई। नामदेव की प्रसिद्धी सुनकर संत ज्ञानेश्वर पंढरपुर आये। ज्ञानेश्वर के आग्रह पर नामदेव इनके साथ तीर्थाटन पर निकल पड़े। भारतवर्ष का भ्रमण करने के उपरान्त नामदेव ने पंढरपुर लौटने पर विसोवा खेचर को अपना गुरू बनाया और पाण्डुरंग भावना की भक्ति में रम गये।

नामदेव ने भारत के पश्चिम महाराष्ट्र में जन्म लेकर अपनी कर्मभूमि उत्तर भारत को बनाया, क्योंकि उस समय उत्तर (पश्चिमोत्तर) भारत विदेशी मुस्लिम आक्रमणों और उनके अत्याचारों से पीड़ित था। ऐसे समय में शक्ति और भक्ति का नवोन्मेष पंजाब की धरती पर संत नामदेव के द्वारा किया गया। संत नामदेव एक क्रान्तिकारी महापुरुष थे, जिन्होंने तलवार और कुरान के सामने निरीह हिन्दुओं के लिए भक्ति के ढाल का प्रयोग किया। वे महाराष्ट्र के पंजाब में आकर अनेक क्षेत्रों में पीड़ित जनता को संत्रास से मुक्ति दिलाने के लिए भगवन्नाम का सहारा बने। **11**वीं शताब्दी में उत्तर भारत से पश्चिमोत्तर भारत तक आततायियों को अपनी संत-सेना, नागा साधुओं व नाथों के द्वारा भगाया गया था। ऐसे पूज्य संत गोरखनाथ के पथ का अनुसरण संत नामदेव ने किया।

महाराष्ट्रीय संत साहित्य के विद्वान-समीक्षकों ने संत नामदेव पर अपनी अनेक सम्मतियाँ प्रस्तुत की है। संत नामदेव की महत्ता को स्थापित करने वाले डॉ. विनयमोहन शर्मा की पुस्तक 'हिन्दी को मराठी संतों की देन' के बारे में प्रभाकर सदाशिव पण्डित ने लिखा है- "पंढरपुर स्थित महाराष्ट्र के परम आराध्य पाण्डुरंग अर्थात् श्री विट्ठल की महिमा को पंजाब में पहुँचाने वाले संत नामदेव की सरस हिन्दी रचनाओं के आधार पर आचार्य विनयमोहन शर्मा ने उत्तर भारत की संत परम्परा को प्रभावित करने वाले प्रथम संत के रूप में नामदेव जी को उद्घोषित करते हुए हिन्दी साहित्य में एक नये दृष्टिकोण का सूत्रपात किया।"[4]

संत नामदेव में भक्ति का विकास नाथ सम्प्रदाय से माना जाता है क्योंकि ज्ञानेश्वर की प्रेरणा से ही नामदेव पंजाब गये थे। संत ज्ञानेश्वर के पूर्व स्वामी मुकुन्दराज (**1128-96**) नाथ सम्प्रदाय के अनुयायी माने गये हैं, जिन्होंने 'विवेक सिन्धु' एवं 'परमामृत' नामक ग्रन्थों की रचना की है। इसलिए हम मान सकते हैं कि कबीर से पूर्व पश्चिमी भारत-महाराष्ट्र में संत नामदेव के द्वारा जिस निर्गुण भक्ति का प्रवर्तन माना जाता है, उसका सूत्रपात अद्वैतमूलक भक्ति प्रधान भागवत धर्म का प्रयास करने ताले स्वामी मुकुन्दराज और उनके शिष्यों के अतिरिक्त संत ज्ञानेश्वर की प्रेरणा से हुई। नाथ सम्प्रदाय का महाराष्ट्र में अधिक प्रभाव दिखाई देता है। जहाँ आदिनाथ-मत्स्येन्द्रनाथ, गोरक्षनाथ-गहिनीनाथ- निवृत्तिनाथ-ज्ञाननाथ (ज्ञानेश्वर) एवं विसोवा खेचर के साथ-साथ मुकुन्दराज और उनके गुरु रघुनाथ, आदिगुरु हरिनाथ तक इसकी परम्परा दिखाई देती है।

भक्तिकाल की पीठिका के रूप में देखा जाय तो नाथ सम्प्रदाय की परम्परा लगभग पूरे भारत में विकसित दिखाई देती है। उत्तर भारत से चलकर नाथ सम्प्रदाय पश्चिम और दक्षिण तक विस्तारित हुआ। पूरब में असम अरुणाचल-प्रदेश तक फैला हुआ है। मान्यता स्वरूप उत्तर में कश्मीरी शैव दर्शन के विकसित रूप में नाथ सम्प्रदाय का

विस्तार हुआ है। गुरु के प्रति भक्ति-भावना एवं गुरु मार्ग नाथ-सम्प्रदाय की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि है, जिसने निर्गुणी साधना की भक्ति को जन्म दिया। इसका प्रारम्भिक विकास संत नामदेव से पूर्व महाराष्ट्र में होता है। जिसे तेरहवीं शताब्दी में महानुभाव सम्प्रदाय के रूप में जाना गया। इस महानुभाव सम्प्रदाय को परममार्ग, भटमार्ग, महात्मा एवं जयकृष्णी भी कहा जाता है। संत नामदेव ने इसी जयकृष्णी भक्ति का प्रचार महाराष्ट्र से लेकर पंजाब और पश्चिमोत्तर काबुल तक पहुँचाया था। इसी भक्ति परम्परा में दक्षिण की आलवार भक्तिन अण्डाल की भाँति पश्चिम महाराष्ट्र की भक्तिन महदम्बा या महदायिसा थी, जिन्हें संत चक्रधर की शिष्या व मराठी काव्य की प्रथम कवयित्री भी माना जाता है। इसी प्ररम्परा में कृष्णमुनि नामक महानुभाव का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने काबुल तक जयकृष्णी पंथ को विकसित करने में अमूल्य योगदान दिया है। इन्होंने अनेक रचनाओं की सर्जना की थी और विदेशी आक्रमणों से संत सर्जना को सुरक्षित बनाये रखने के लिए सकललिपि, सुन्दरीलिपि का आविष्कार किया था।

संत नामदेव एवं संत ज्ञानेश्वर के विषय में प्रभाकर सदाशिव पण्डित ने लिखा है, ''दोनों के मधुर मिलन से वारकरी सम्प्रदाय को परिपूर्णता प्राप्त हुई। यदि ज्ञानेश्वर का सत्संग प्राप्त न हुआ होता तो नामदेव की भक्ति पंढरपुर स्थित श्रीविट्ठल मूर्ति तक ही मर्यादित रह जाती और नामदेव का लाभ ज्ञानेश्वर को न मिलता तो उनका दर्शन केवल ग्रन्थों में ग्रथित रह जाता।''[5] इस प्रकार दोनों के प्रयास से वारकरी सम्प्रदाय विकसित हुआ। संत नामदेव की महत्ता को स्थापित करते हुए डॉ. मोहन सिंह ने 'भक्त शिरोमणि नामदेव की नई जीवनी-नई पदावली' में लिखा है कि महाराष्ट्र में यदि नामदेव न होते तो वहाँ तुकाराम न होते, न उत्तर प्रदेश में कबीर, न राजपूताने में दादू और न पंजाब में गरीबदास होते। किसी भी मध्ययुगीन रहस्यवादी पद में इतनी निर्भयता और मधुरता नहीं पायी जाती है, जितनी पेशे से दर्जी का काम करने वाले में पायी जाती है। वे प्रथम महापुरुष थे, जिन्होंने यह सिद्ध किया कि गुरु ही ईश्वर है और भक्त तथा भगवान एक ही है।'[6]

संत नामदेव का परिवार छीपा जाति का था, जिनका मुख्यकर्म सिलाई या दर्जी का काम था। इसीलिए नामदेव अपने को हीन एवं नीच जाति का मानते थे। माता-पिता अपने दर्जी के कार्य में लगाना चाहते थे, किन्तु नामदेव परम भागवत धर्म के साधक बन गये, जिनका जीवन राष्ट्रकार्य में समर्पित हो गया। वे सदैव उपने अभंग (भजन) को गाते हुए करताल एवं एकतारा बजा-बजा करके अपने गुरु संत बिसोवा के आदेश- **'दुनिया को भगवत् नाम से भर दो'** को सिद्ध करने में लगे थे। महाराष्ट्र संत नामदेव की जन्मभूमि थी, किन्तु पंजाब में अंतिम बीस वर्ष तक कर्मभूमि बना रहा, जहाँ उन्होंने 1350 ई. में अन्तिम साँस ली। पंजाब के उस घुमाण स्थान पर गुरुद्वारा बनवाया गया है। इनके पंजाबी क्षेत्र के अनुयाइयों को 'नामदेविया' नाम से सम्बोधित किया जाता है।

इनके जीवन में अनन्त अलौकिक कार्य हुए हैं, जो इतना किसी के लिए चमत्कारिक कार्य सम्भव नहीं है। हरिद्वार से रामेश्वर जाते समय मृतक गधे के मुँह में गंगाजल डालते गधे का उठना, श्री विट्ठलनाथ के विग्रह को दूध पिलाना, मृतक गाय को जिलाना, मंदिर का द्वार घूम जाना, कुत्ते की रोटी में घी लगाना आदि उनके जीवन की अनेक चमत्कारिक घटनाएँ हैं, जिसका उल्लेख क्रमशः नाभादास एवं गुरुदास ने अपने पदों में किया है-

बालदशा विट्ठल पानी जाके पय पीनी।
मृतक गऊ जिवाई परचौ असुरन को दीयो।।

x x x

कम्भ किते पिउ चल्लिआ नामदेव नो आख सिधाया।
ठाकुर दी सेवा करो दूध पीआवण कहि समझाया।।

कतिपय आलोचक यह विचार गढ़ते हैं कि ब्राह्मणवाद, कर्मकाण्ड, वाह्याडम्बर से ऊबकर नामदेव जी महाराष्ट्र छोड़कर पंजाब की ओर चले गये जो कि यह सत्य नहीं है। प्रभाकर सदाशिव 'पण्डित' ने इसका उल्लेख किया है,- ''अतः यह स्पष्ट है कि एकान्त साधना की अपेक्षा विशिष्ट हेतु सामने रखकर नामदेव जी मुस्लिम बादशाहों के नित्य आक्रमणों से अस्थिर पंजाब में न केवल पहुँचे, बल्कि वर्षों तक अथक भक्ति का प्रसार करते रहे और अपनी विशुद्ध निर्गुणोन्मुखी भक्तिधारा से गुरु नानकदेव के लिए अनुकूल भूमि तैयार की, जिससे विदेशी आक्रमणों को पचाने की शक्ति स्थानीय भूमिपुत्रों को प्राप्त हुई।''[7]

उत्तर भारत के गुरु गोरखनाथ, स्वामी रामानन्द की भाँति पश्चिम के नामदेव एवं उत्तर के गुरु नानक देव ने भारतीय हिन्द समाज के लिए अनुपम त्याग किया, जिन्होंने मुस्लिम आतताइयों के प्रति मुखर विरोध का स्वर अपनाया तथा कड़ी चुनौती देते हुए भारतीय समाज में समरसता एवं समन्वयात्मकता की स्थापना की थी। संत नामदेव का पंजाब में गुरुनानक की भाँति अधिक सम्मान है। पंजाब में उनकी शिष्य परम्परा एवं सम्प्रदाय की विभिन्न शाखाएँ विद्यमान हैं, जिनके प्रमुख शिष्यों में बहोरदास, विष्णुस्वामी, जालो, लध्धा और केसो कलाधारी हैं। पंजाब के गुरुदासपुर जिले के घुमान ग्राम में देहरा साहब के नाम से 'गुरुद्वारा बाबा नामदेव जी' की स्थापना बहोरदास जी द्वारा की गई थी। इन शिष्यों की परम्परा में जनाबाई नामक मराठी दासी का नामोल्लेख मिलता है। नामदेव की अंतिम साँस पंढरपुर में छूटी थी, ऐसी भी मान्यता है, जिनके शोक में पूरा परिवार समाधि ले ली थी। बह गर्भवती थी और इसने नामदेव के पुत्र गोंदा महाराज को जन्म दी थी। आषाढ़ शुक्ल एकादशी उनके प्रयाण की तिथि होने से आज भी कांकरी संतों का पंढरपुर में मेला लगता है।

संत नामदेव जी को महाराष्ट्र में भक्ति का अवतार माना जाता है। कबीर ने अपनी भक्ति नामदेव से अर्जित की थी। ज्ञानपंथ का भक्ति में द्वार खोलने वाले नामदेव थे। इसलिए कबीर नामदेव की श्रेष्ठता को स्वीकारते हुए, उन्हें गुरु-प्रसादी से सम्बोधित किया है-

रे मन पंछिया न परिसि पिंजरें, संसार माया जाल रे।
इक दिन में तीन फेरा, तो ही सदा सदा झपै काल रे।।

x x x

भनत नामदेव सुन्नु हो तिलोचन, घटि दया धम पालि रे।
पाहुना दिन च्यारि केरा, सुकृत राम संभारि रे।।

वे सामाजिक जातिवाद, ब्राहमणवाद एवं परम्परावाद का विरोध भी करते दिखाई देते हैं-

पांडे मोहि पढ़ावहु हरी, विद्या अपनी राखउ धरी।

x x x

हम तुम पांडे कैसा बाद, रामनाम पढ़िहै प्रह्लाद।।

संत नामदेव जी सामाजिक-भेदभाव की नब्ज को पहचानते थे। इसलिए वे इसको समाप्त कर सामाजिक सद्भाव लाना चाहते थे। उनके एक पद में यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने जातिगत भेद-भाव के प्रभाव को समाप्त करने में अमिट योगदान किया-

का करो जाती का करौ पाती, राजाराम सेऊं दिनराती।

x x x

सुरति की सुई प्रेम का धागा, नामा का मन हरि सूँ लागा।।

मराठी भाषा में संत नामदेव के अनेक अभंग व पद प्राप्त होते हैं। उनकी श्रेष्ठता का परिचायक 'श्रीगुरुग्रन्थ साहब' में संगृहीत उनकी **63** रचनाएँ भी हैं। उन्होंने ब्रजमिश्रित भाषा में अनेक पदों की रचना की है, जो भारतीय साहित्य के लिए अक्षयनिधि है। इनकी भक्ति एवं योग साधना मध्यकालीन साहित्य एवं दर्शन में मणिकांचन संयोग बनाता है। महाराष्ट्र की धरती के संत -प्रभाकर का आलोक सम्पूर्ण धरती पर प्रकाशमान है। नामदेव के द्वारा मराठी साहित्य में **2373** अभंगों में से **103** पद हिन्दी भाषा में रचित हैं। कुछ विद्वान **230** पद एवं **13** साखियाँ हिन्दी में भी रचित मानते हैं।

****

सन्दर्भ सूची-

1.डॉ. बलदेव बंशी-भारत के महान संत पृ. 38
2.श्रीमती डॉ रमेश सेठ-महारष्ट्र की वैष्णव-भक्ति परम्परा और तुकाराम, पृ. 21
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 65-67
4.डॉ. विनयमोहन शर्मा - हिन्दी को मराठी संतों की देन, पृ. 13
5. वही, पृ. 17
6. डॉ. मोहन सिंह- भक्त शिरोमणि नामदेव की नई जीवनी-नई पदावली-पृ. 24
7. डॉ. विनयमोहन शर्मा - हिन्दी को मराठी संतों की देन, पृ. 21